शक्ति और बल (Power and force) - सामान्यतया शक्ति और बल को एक ही समझा जाता है, किन्तु वास्तव में इन दोनों में अन्तर है। शक्ति बल का पर्यायवाची नहीं है, क्योंकि शक्ति प्रच्छन्न बल है और बल प्रकट शक्ति। शक्ति की पृष्ठभूमि में बल रह सकता है, किन्तु वह बिल्कुल अलग है। शक्ति अप्रकट तत्व है, बल प्रकट तत्व है। बल का अर्थ है शारीरिक (Sanctions) की प्रयुक्ति या प्रतिबन्धों की व्यवस्था, जिसमें साधारण जुर्माने से लेकर प्राणदण्ड तक शामिल है। बल दृष्टि से शक्ति एक मनोभाव अथवा पूर्ण क्षमता है जो कि बल को सम्भव बनाती है। रॉबर्ट बायर्सटेड के अनुसार, "शक्ति बल प्रयोग की यौग्यता है न कि इसका वास्तविक प्रयोग।" वास्तव में, बल शक्ति का एक रूप है, किन्तु बल ही शक्ति नहीं है। बायर्सटेड ने शक्ति के तीन रूप बताए हैं: बल, प्रभाव तथा प्रभुत्व। बल शक्ति के दामन में उसी प्रकार रहता है, जैसे बादल में बिजली रहती है। जब बल असमर्थित तथा लक्ष्यहीन होता है, तब उसे दमन कहा जाता है। स्वीकृत, सीमित तथा नियन्त्रित बल को शक्ति कहा जाता है, इस प्रकार शक्ति बल की तुलना में निश्चित रूप से एक व्यापक तत्व है।

राजनीतिक शक्ति एवं सैनिक शक्ति में अन्तर (Distinction between Political Power and Military Power) - यद्यपि राजनीतिक शक्ति और सैनिक शक्ति दोनों व्यापक दृष्टिकोण से शक्ति के ही प्रकार हैं, किन्तु इन्हें एक ही नहीं समझ लिया जाना चाहिए। राजनीतिक शक्ति एक जटिल तत्व है जिसमें सदैव ही शक्ति के अन्य रूप भी सम्मिलित होते हैं; जैसे धन, शस्त्र-सामग्री, नागरिक सत्ता, मत पर प्रभाव, आदि। सैनिक शक्ति एक स्पष्ट तत्व है जो सैन्य बल पर आधारित होता है। राजनीति में सैनिक शक्ति का स्थान अत्यन्त गौण रहता है क्योंकि शक्ति वास्तविक बल प्रयोग नहीं, वरन्

Avinash

बल की क्षमता है। ऑर्गेन्स्की ने राजनीतिक शक्ति को मनोवैज्ञानिक शक्ति माना है जिसके अनुसार मनुष्य दूसरे मनुष्यों की क्रियाओं तथा मस्तिष्कों पर नियन्त्रण रखता है। सैनिक शक्ति दमन का वास्तविक प्रयोग है। जब हिंसा या दमन का वास्तविक प्रयोग किया जाता है तो उसका अर्थ है कि सैनिक या अर्द्धसैनिक शक्ति के पक्ष में राजनीतिक शक्ति ने अधित्याग कर दिया है किन्तु डायक सैनिक शक्ति को भी राजनीतिक शक्ति के अन्तर्गत रखने के पक्ष में है। उनके अनुसार संघर्ष राजनीति का मूल सार है चाहे वह शब्दों द्वारा या हिंसा द्वारा किया जाए। इस दृष्टि से सैनिक शक्ति को राजनीतिक शक्ति का एक उप विभाग समझा जाना चाहिए। फिर भी सैनिक शक्ति राजनीतिक शक्ति की पृष्ठभूमि में ही रहती है। शस्त्रों, हिंसा या दमन द्वारा स्थापित सुव्यवस्था आदिमकालीन समाज की प्रतीक है जो किसी भी सभ्य राजनीतिक समाज के लिए प्रतिष्ठा की वस्तु नहीं हो सकती है। राजनीतिक शक्ति मनोवैज्ञानिक प्रभाव, नेतृत्व तथा स्वेच्छा जैसे तत्वों पर आधारित हो सकती है।

Avinash